प्रैस विज्ञप्ति

सैयदना खुज़ैमा कुतबुद्दीन 53वें दाइ उल–मुतलक और दाउदी बोहरा समुदाय के नेता हैं

11 मार्च 2014:
हमारे प्रिय एवं आदरणीय मौला सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब RA, दाउदी बोहरा समुदाय के 52वें दाइ अल–मुतलक के दुखद इंतकाल के पश्चात् सैयदना कुतबुद्दीन साहब TUS ने खुलासा किया है कि सैयदना बुरहानुद्दीन साहब RA ने उन्हें 10 दिसंबर 1965 को अपने वारिस के तौर पर अभिषिक्त किया था, यह वही दिन था जिस दिन उन्होंने (सैयदना बुरहानुद्दीन साहब RA ने) उन्हें बतौर माज़ून अभिषिक्त किया था जो कि दाइ के बाद दूसरी आध्यात्मिक पदवी होती है।

यद्यपि, शहजादा मुफद्दल भाईसाहब (सैयदना बुरहानुद्दीन साहब RA के दूसरे पुत्र), उनके भाईयों और परिवार के अन्य सदस्यों ने सैयदना बुरहानुद्दीन साहब RA को लंदन में पड़े स्ट्रोक का फायदा उठाया, इस स्ट्रोक के चलते उनकी हालत गंभीर और वे बेहद कमजोर हो गए थे। सैयदना को हॉस्पिटल में भर्ती करने के तीन दिनों बाद 4 जून 2011 को उन लोगों ने इकतरफा, झूठा दावा किया कि सैयदना बुरहानुद्दीन साहब RA ने उस हालत में अपने तीन अन्य बेटों को बुलाया और ऊंची आवाज़ में बारंबार अपने दूसरे बेटे को अपना वारिस घोषित किया। इस झूठे दावे को सच साबित करने और समुदाय में भ्रम की स्थिति फैलाने के लिए वे लोग 14 दिनों के बाद एयर ऐम्बुलेंस के जरिए सैयदना को गंभीर हालत में ही मुंबई ले आए और एक समारोह आयोजित किया जहां हजारों की तादाद में लोग जमा थे लेकिन स्ट्रोक के असर की वजह से सैयदना स्पष्ट तौर पर कुछ बोल नहीं सके। ***हम जानते हैं कि यह एक झूठा दावा है और हमारे पास इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि चिकित्सीय तौर पर यह संभव नहीं था।*** ये सबूत सही मंच पर पेश किए जाएंगे और समुदाय के बीच फैलाए गए झूठ का खुलासा करेंगे।

सैयदना कुतबुद्दीन पवित्र प्रार्थना में थे और धार्मिक विश्वास के मुताबिक 40 दिनों के शोक की अवधि की मर्यादा को कायम रखे हुए थे।

युनिवर्सिटी ऑफ मैनचेस्टर से पीएचडी डॉ अब्दीली कुतबुद्दीन ने कहा, ''अब चूंकि शोक की अवधि समाप्त हो चुकी है, तो अब वक्त आ गया है कि सच्चाई को लोगों को सामने लाया जाए ताकि शहजादों द्वारा किए गए झूठे दावे से फैले भ्रम का निवारण किया जा सके।'' उन्होंने बताया कि दाउदी बोहरा समुदाय और व्यापक समाज सही स्थिति जान सके यह सुनिश्चित करने के लिए पुख्ता कदम उठाए जा रहे हैं।

दाउदी बोहरा समुदाय इस्लाम के उदार एवं अनेकतावादी दस्तूर का प्रतीक है तथा इस समुदाय ने भारत के सामाजिक व आर्थिक परिदृश्य में विपुल योगदान दिया है। जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में जब सैयदना बुरहानुद्दीन अस्वस्थ थे तब उनके बेटों ने नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया और दाउदी बोहराओं के तानेबाने को बदलने की कोशिश की। लोगों से कहा जाने लगा कि वे सोचें नहीं, अपनी बेटियों को पढ़ाएं नहीं, अपने बच्चों को युनिवर्सिटी में पढ़ने न भेजें, जो लोग ऐसा नहीं करते उन्हें सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा करें, बगैर जवाबदेही मांगे भारी रकम दान करें। वह समुदाय जो हजार सालों से भारत के धर्मनिरपेक्ष और अनेकतावादी

तानेबाने में घुलामिला है, उसे आज अलगाववाद, जातिवाद और कट्टरता की ओर दिग्भ्रमित किया जा रहा है। अपने पूर्ववर्तियों सैयदना ताहेर सैफुद्दीन और सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन की परंपरा पर चलते हुए सैयदना कुतबुद्दीन हर मुमकिन कोशिशें कर कर रहे हैं कि चरमपंथी ताकतों के खिलाफ समुदाय की सच्ची एवं उदारवादी पहचान को सुरक्षित कर सकें।

उनके पूर्ववर्तियों – 51वें दाइ और और 52वें दाइ – ने उन्हें इस चुनौतिपूर्ण वक्त से निपटने के लिए उन्हें तैयार किया था। वे अपने इमाम तथा उनकी आध्यात्मिक संतानों, समुदाय के हर सदस्य की ओर अपनी प्रतिबद्धता पर अडिग हैं।

सैयदना खुज़ैमा कुतबुद्दीन की सोच और फलसफा, जो उन्हें 51वें दाइ और और 52वें दाइ विरासत में हासिल हुआ हैः

नैतिक जीवन

- शरियत को उनकी सर्वश्रेष्ठ काबिलियत के मुताबिक कायम रखना
- नैतिकता के सर्वोच्च मानकों को बनाए रखना
- समुदाय के सभी सदस्यों के लिए इज़्ज़त और मर्यादा को बनाए रखना
- अल्लाह की सभी औलादों की मदद करने की कोशिश करना

शिक्षा

- कुरान की शिक्षा और हमारी फातेमी विरासत शाश्वत प्रकाश और इनायत के स्त्रोत हैं
- उन्हें सर्वश्रेष्ठ संभव धर्मनिरपेक्ष शिक्षा हेतु प्रयास करना चाहिए
- स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार है और उन्हें इसके लिए बढ़ावा देना चाहिए

वित्तीय मुद्दे

- धार्मिक तौर पर प्राप्त धन शरियत के नियमों का कड़ाई से पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए
- हमें हमेशा वंचित लोगों के लिए सबसे ज्यादा फिक्रमंद होना चाहिए
- सूचना के इस युग में हमारे समुदाय के पास गतिशील कारोबारी सोच होनी चाहिए

सैयदना कुतबुद्दीन साहब TUS की प्राथमिक एवं एकमात्र फिक्र है दाउदी बोहरा समुदाय का आध्यात्मिक व लौकिक कल्याण। उनका ध्येय (दावात) है समुदाय का मार्गदर्शन करना जैसा कि उनके पूर्ववर्ती सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब RA ने किया, एक आध्यात्मिक व नैतिक जीवन के सच्चे पथ (सिरातुल मुस्तकीम) पर, जो मरणोपरांत (आखेरात) निर्वाण (नजात) की ओर ले जाता है।

हाल का यह घटनाक्रम, बेशक, दाउदी बोहरा समुदाय की आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहद महत्व का है। मजहबी आज़ादी, महिलाओं के अधिकार और हमारे महान देश में सामुदायिक सौहार्द के पुनीत विचारों पर इनका गंभीर नतीजे हो सकते हैं।

–0–0–0–